History, Degree Part-2, Paper-3, Unit-5

Topic: Growth of Language and Literature

Dr. Md. Shakil Akhtar, Lect: 27

Date: 27.04.2020

दिल्ली के तुर्क अफगान शासकों ने भाषा और साहित्य के विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया। इसका लाभ मूल्य रूप से क्षेत्रीय भाषाओं को हुआ। हिन्दी, बंगला एवं अन्य क्षेत्रीय भाषाओं ने इस काल में विविधित उन्नति प्राप्त की और साहित्यिक रचना आरम्भ हुई।

तुर्क शासकों की मातृभाषा तुर्की थी, प्रशासनिक भाषा फारसी थी और धार्मिक भाषा अरबी थी। यह तीनों भाषाएँ भारत की प्रजा के लिए अनजान थी। भारतीय शासक संस्कृत भाषा का प्रयोग करते थे। आम प्रजा विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग बोलियाँ बोलते थे जो सामूहिक रूप से अपभ्रंश कहलाती थी। इसी अपभ्रंश से आधुनिक उर्दू, हिन्दी, पंजाबी, बंगला & मराठी आदि भाषाओं की उत्पत्ति हुई।

उर्दू एक मिश्रित भाषा है, जिस में अरबी, फारसी, तुर्की की शब्दावली और दूसरी ओर खड़ी बोली, हरियाणवी, ब्रज भाषा आदि की शब्दावली मिली है। इसकी लिपि फारसी है और व्याकरण भारतीय भाषाओं के समान है। इसकी उत्पत्ति 11वीं शताब्दी से ही आरम्भ हुई। इस के दो कारण बताए जाते हैं।

एक, सैनिकों और भारतीय प्रजा के बीच सम्पर्क, और दूसरा, सूफी-संतों द्वारा धर्म प्रचार और उपदेश देने के क्रम में।

Scanned with CamScanner

हिन्दी भाषा का विकास राजपूत शासनकाल से माना जाता है। इसका भी मूल खड़ी बोली, ब्रज भाषा, राजस्थानी आदि में देखा जा सकता है। इस भाषा के आरंभिक उदाहरण वीरगाथा काव्यों के रूप में सुरक्षित है। जैसे पृथ्वीराजरासो, आल्हाखण्ड, हम्मीररासो आदि। इसके अतिरिक्त अमीर खुसरो और सूफी संतों की रचनाओं में भी हिन्दी भाषा के आरम्भिक उदाहरण देखे जा सकते हैं। हिन्दी को सम्पन्न करने में भक्ति-काल के संत-कवियों का उल्लेखनीय योगदान रहा जैसे कबीरदास, सूरदास एवं भक्ति-रस के कवियों में जयदेव तथा विद्यापति का योगदान अद्वितीय रहा।

बंगला भाषा की उत्पत्ति गौड़ प्राकृत से मानी जाती है। इसके आरम्भिक विकास में बौद्ध धर्मावलम्बियों का योगदान रहा परन्तु तुर्क शासकों ने इसे सम्पन्न रूप प्रदान किया। बंगाल के तुर्क शासकों ने विभिन्न संस्कृत भाषा की रचनाओं का बंगला में अनुवाद करवाया जिससे बंगला भाषा की सम्पन्नता बढ़ी। चैतन्य के अनुयायियों ने बंगला में अनेक रचनाएँ रची।

पंजाबी भाषा के विकास में सूफी संतों का उल्लेखनीय योगदान रहा। प्रसिद्ध संत ~~सस्प~~ फरीदुद्दीन गन्जेशकर ने अपने उपदेशों में पंजाबी भाषा का उपयोग किया। उनके उपदेश के कुछ अंश आदि ग्रन्थ में सुरक्षित है। बुल्लेशाह और अन्य सूफी संतों ने पंजाबी भाषा का उपयोग किया। भक्ति संत गुरु नानक देव ने विशेषकर पंजाबी भाषा को सम्पन्न बनाया।

मराठी के विकास में भक्त-संतों जैसे नामदेव एवं तुकाराम का विशेष योगदान रहा। इसी प्रकार राजस्थानी भाषा के विकास में मीराबाई ने योगदान किया। गुजराती भाषा के विकास में नरसी मेहता और संत वल्लभाचार्य का महत्वपूर्ण योगदान रहा। गुजराती भाषा के विकास में वहाँ के तुर्की शासकों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा।

दक्षिणी भारतीय भाषाओं के विकास में मुख्यतः तेलगू और कन्नड़ की प्रगति का विशेष काल रहा। तेलगू के विकास में विजयनगर के शासकों और बीजापुर एवं गोलकुण्डा के शासकों का योगदान निर्णायक रहा। इन दोनों ~~सल्तनत~~ सल्तनतों ने दक्षिण भारत में उर्दू भाषा के विकास में भी सराहनीय योगदान दिया।

इस प्रकार तुर्क-अफगान काल में आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास प्रशंसनीय ढंग से हुआ। इस प्रक्रिया को दो स्तरों पर देखा जा सकता है। कुछ भाषाओं के विकास में तुर्क सुल्तानों का प्रत्यक्ष योगदान रहा जबकि कुछ भाषाओं में अप्रत्यक्ष। जैसे तुर्की प्रशासन व्यवस्था की जिद में भक्त एवं सूफी संतों ने विभिन्न क्षेत्रों में स्थानीय भाषा का प्रयोग किया।

अतः यह स्पष्ट है कि तुर्क शासक वर्ग केवल योद्धा और विजेता ही नहीं बल्कि संस्कृति के पोषक भी थे।

Scanned with CamScanner